गोदान के स्त्री पात्र

सुमन देवी*

टी.जी.टी. हिंदी, कन्या गुरुकुल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
गैंडा खेड़ा, उचाना, जींद, हरियाणा, भारत

Email ID: *sumankhatkar383@gmail.com*

Accepted: 06.04.2022 **Published**: 01.05.2022

मुख्य शब्दः गोदान, स्त्री पात्र।

शोध आलेख सार

'गोदान' मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित एक ऐसा उपन्यास है, जिसे अगर 'महाकाव्य' कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। यह उपन्यास यथार्थवाद और मनोविश्लेषण वाद का ऐसा संगम है कि जब हम इसे पढ़ते हैं, तब हम स्वयं को भूलकर पात्रों से इस तरह जुड़ जाते हैं कि उनके सुख–दुख हमारे सुख–दुख बन जाते हैं। उपन्यास में कृषक जीवन की समस्याओं को मुख्य रूप से उभारा है, लेकिन उस समय स्त्री की स्थिति क्या रही होगी यह भी हमें उपन्यास से पता चलता है। यह उपन्यास बेशक किसान से मजदूर बने 'होरी' पर आधारित हो लेकिन इसमें नायिका के रूप में उभरकर होरी की पत्नी 'धनिया' ही आती है। वह हर परिस्थिति में जैसे व्यवहार करती है। वह गजब है। लेकिन प्रेमचंद ने स्त्री पात्रों को परिवार के प्रति तथा प्रेम के प्रति समर्पित दिखाया तथा परिवार में चाहे उसका जितना भी शोषण हो रहा हो, वह सब सह रही है। शायद उस समय की परिस्थितियाँ ऐसी रही होगी, जिस कारण उसमें दमित होकर जीना ही स्त्री की व्यवस्था रही होगी। लेकिन यहाँ प्रेमचंद ने आगे बढ़ते हुए भारतीय समाज में जो–जो बुराईयाँ, रूढ़ियाँ और परंपराएँ थी कि जिस कारण से स्त्री का शोषण और दमन हो रहा था, उसे इंगित करते हुए वे यह कहना चाहते हैं कि इनके खिलाफ स्त्री स्वंय संघर्ष करें और अपने अस्तित्व के प्रति स्वंय सचेत हो। तथा प्रेमचंद ने एक आशा की ओर बढ़ते हुए स्त्री पात्रों को गढ़ा है। कथानक में कहानी स्त्री पात्रों के इर्द–गिर्द घूमती है तथा स्त्री यहाँ सशक्त रूप से उभर कर आती है।

पहचान निशान

**Corresponding Author*

परिचय

'गोदान' उपन्यास में 'धनिया' एक ऐसा स्त्री पात्र है, जिसका संघर्ष उपन्यास में शुरू से

अंत तक रहता है। उसे जीवनभर संघर्षों से जूझना पड़ता है। धनिया जो अपने परिवार के लिए खेतों में काम करती है। घर पर भी काम करती है। वह दिन–रात संघर्ष करती नजर आती है। जहाँ होरी दब्बू किस्म का आदमी है, वही धनिया एक सशक्त रूप से उभर कर आती है। वह हर परिस्थिति का सामना साहस से करती है तथा धर्म और न्याय के लिए सदैव संघर्ष करती है। वह किसी भी स्थिति में घबराती नहीं है। वह बड़े ही साहस और निडरता से उन परिस्थितियों का सामना करती है। वह न्याय में विश्वास रखने वाली स्त्री है। जो न अन्याय सहन करती है और न ही किसी और के साथ होने देती है। जब–जब उपन्यास में होरी दब्बू पड़ता है। वह शेर की तरह दहाड़ कर सामने आती है। ऐसा ही एक वाक्या तब आता है, जब होरी दरोगा जी से डरकर उसे रिश्वत देने के लिए रुपए उधार लाता है, तो धनिया झपट कर रुपए छीन लेती है, वह फुंफाकर बोलती है – ''यह रुपए कहाँ से लिए जा रहा है, बता ? भला चाहता है, तो सब लौटा दे, नहीं कहे देती हूँ। घर के परानी रात दिन मरें और दाने–दाने को तरसें, लत्ता भी पहनने को मयस्सर न हो और अँजुली भर रुपए लेकर चला है इज्जत बचाने। ऐसी बड़ी है तेरी इज्जत जिसके घर में चूहे लोंटे, वह भी इज्जतवाला है। दरोगा तलासी ही तो लेगा। ले–ले जहाँ चाहे वहाँ तलासी। एक तो सौ रूपये की गाय गयी, उस पर यह यह पलेथन। वाहरी तेरी इज्जत ! ..... होरी स्तम्भित–सा खड़ा रहा। जीवन में आज पहली बार धनिया ने उसे भरे अखाड़े में पटकनी दी, आकाश तका दिया।''[1]

धनिया किसी की खुशामद करना ठीक नहीं समझती वह आत्मस्वाभिमानी औरत है, जो समझती है कि अगर जमींदार खेत देगा तो लगान ही तो लेगा। कौन–सा मुफ्त में खेत देगा वह मुँहफट और बेबाक है। और अन्याय के खिलाफ हमेशा आवाज उठाती है। वह समय–समय पर अपना लोहा गाँवों वालों से मनवाती रहती है। दरोगा भी स्वीकार करते हैं – औरत है बड़ी दिलेर।

पटेश्वरी बोले – ''दिलेर है हजूर, कर्कशा है। ऐसी औरतों को तो गोली मार दे।

'तुम लोगों का काफिया तंग कर दिया उसने'।''[2]

इस प्रकार उपन्यास में कितने ही अवसर आते हैं, जब होरी कमजोर पड़ता है, वह सबल बनकर सामने आती है। वह कहीं भी अपनी बात रखने से नहीं हिचकिचाती है। झूनिया जब होरी के घर रहने लगती है, तब वह समाज की परवाह न करते हुए मानवता का परिचय देती है। वह पंचायत में भी कह देती है उन्होंने ऐसा कौन–सा पाप किया है जो उन्हें इतनी कठोर सजा सुनाई है। धनिया कहती है – ''मैं एक दाना न अनाज दूंगी, न कौड़ी डाँड। जिसमें दम हो चलकर मुझसे ले। अच्छी दिल्लगी है। सोचा होगा, डाँड के बहाने इसकी सब जैजात ले और नजराना लेकर दूसरे को दे दो। बाग–बगीचा बेचकर मजे से तर माल उड़ाओ। धनिया ने जीते–जी यह नहीं होने का और तुम्हारी लालसा तुम्हारे मन में ही रहेगी। हमें नहीं रहना बिरादरी में। बिरादरी में रहकर हमारी मुकुत न हो जाएगी। अब भी अपने पसीने की

[1] मुंशी प्रेमचंद, गोदान, पृष्ठ 63

[2] वही, पृष्ठ 68

कमाई खाते हैं, तब भी अपने पसीने की कमाई खाएंगे।''[3]

धनिया परिवार के प्रति समर्पित स्त्री है। वह अपने बच्चों से अत्यंत स्नेह रखती है और अपने बच्चों के लिए जीवन में अनेक संघर्ष करते हुए होरी से तथा समाज से टकराती है। ताकि उसके बच्चों के साथ अन्याय न हो सके। धनिया अनुभवशाली नारी है। वह समाज को समझती है और अवसर का भी भरपूर फायदा उठाना जानती है। जब घर में गाय आती है, तब वह उसे घर के आंगन में ही बांधने पर अड़ी रहती है। क्योंकि उसे समाज की कुदृष्टि का पता है।

धनिया अन्याय के खिलाफ हमेशा आवाज उठाती है। वह झुनिया और सीलिया को भी अपने घर में शरण देती है। धनिया एक स्वाभिमानी औरत है। होरी जब सारे गांव वालों के सामने उसे मारता है तो वह होरी से कहती है – ''अपनी मेहरिया को सारे गांव के सामने लतियाने से इसकी इज्जत नहीं जाती। यही तो वीरों का करम है। बड़ा वीर है, तो किसी मर्द से लड़। जिसकी बाँह पकड़कर लाया, उसे मारकर बहादुर ने कहलाएगा। तू समझता होगा, मैं इसे रोटी–कपड़ा देता हूँ। आज से अपना घर संभाल। देख तो इसी गांव में तेरी छाती पर मूंग दलकर रहती हूँ कि नहीं और उससे अच्छा खाऊँ–पहनूँगी। इच्छा हो, देख ले।''[4]

धनिया इस अपमान को कभी नहीं भुला पाती है। वह ना किसी के साथ अन्याय करती है। और ना ही सहन करती है। होरी की दब्बू प्रवृत्ति के कारण उसे अनेक कष्ट सहन करने पड़ते हैं, पर वह उसका साथ कभी नहीं छोड़ती है।

उपन्यास में हीरा की पत्नी पुनिया अपना हक कभी नहीं छोड़ती है। वह अपने पदाधिकार कभी नहीं छोड़ती है। चाहे फिर उसे कितनी भी मार क्यों ना सहन करनी पड़े। वह अपने घर की सम्राज्ञी थी, लेकिन हीरा अहं वश उसे मारता जरूर था, लेकिन घर में शासन पूनिया का ही चलता था। एक बार जब होरी चौधरी को बाँस बेच देता है। तब पुनिया चौधरी से कहती है – ''पन्द्रह रूपए में हमारे बॉस न जाएंगे। ..... समीप आकर चौधरी का हाथ पकड़ने की चेष्टा करती हुई बोली–आदमी को क्यों भेज दू ? जो कुछ कहना हो, मुझसे कहो न ? मैंने कह दिया मेरे बाँस न कटेंगे। चौधरी हाथ छुडाता आता था और पुन्नी बार–बार पकड़ लेती थी, एक मिनट तक यही हाथापाई होती रही, अंत में चौधरी ने उसे ज़ोर से पीछे धकेल दिया पुन्नी धक्का खाकर गिर पड़ी, मगर फिर संभली और पाँव से तल्ली निकालकर चौधरी के सिर मुँह, पीठ पर अंधाधुंध जमाने लगी . ..... चौधरी उसे धक्का देकर – नारी जाति पर बल का प्रयोग करके – गच्चा खा चुका था। खड़े–खड़े मार खाने के सिवा इस संकट से बचने की उसके पास और कोई दवा न थी।''[5] गोदान उपन्यास में हर स्त्री पात्र सशक्त है। लेकिन उसे इस पितृसत्तात्मक व्यवस्था में बोलने तक की आजादी नहीं है।

मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' में **स्त्री पात्रों को सशक्त तथा अपने अधिकारों के लिए जुझते तो दिखाया लेकिन अंत में चलती पुरुष की**

[3] मुंशी प्रेमचंद, गोदान, पृष्ठ 108
[4] वही, पृष्ठ 67
[5] मुंशी प्रेमचंद, गोदान, पृष्ठ 17

ही है। और इस कारण वह विवश होकर रह जाती है। उपन्यास में रूपा और सोना के माध्यम से समाज में अनमेल विवाह और दहेज प्रथा को उजागर किया है। यह उपन्यास **एक ऐतिहासिक दस्तावेज है। जिसमें समाज का अति सूक्ष्म विश्लेषण हमें प्राप्त होता है।**

झुनिया के माध्यम से विधवा विवाह की समस्या तथा कैसे हर कोई उसका उपभोग कर लेना चाहता है दिखाया है। जब वह गोबर पर विश्वास कर अपना सब कुछ उस पर अर्पित कर देती है, तब गोबर भी कैसे डर के कारण घर से भाग जाता है। असल में गोदान में स्त्री पात्रों में नायक के गुण हैं, लेकिन उस समय की समाज व्यवस्था ही शायद ऐसी रही होगी जिस कारण प्रेमचंद ने पहले तो प्रत्येक स्त्री पत्र को नायक बनाया, परंतु फिर अंत में उसे छोड़ दिया, उसे पुरुष के अधीन ही। या यह प्रेमचंद जी की सोच ही होगी क्योंकि वह भी तो उसी समाज का हिस्सा थे। 'गोदान' उपन्यास में झुनिया भी विवाह संस्था के अधीन है। वह विवाह करके एक स्थाई बंधन में बंधना चाहती है। **इस तरह से प्रेमचंद जी भी पितृस्तात्मक व्यवस्था की विवाह नामक संस्था का समर्थन करते नजर आते हैं।**

'गोदान' उपन्यास में स्त्री को प्रेम की मूर्ति दिखाया गया है। झुनिया की मां नहीं है। और बाप उसे बुरा भला कहता है। झुनिया धनिया से कहती है – ''अम्माँ, अब अपना बाप होकर मुझे धिक्कार रहा है, तो मुझे डूब ही मरने दो। मुझ अभागिन के कारण तो तुम्हें दुख ही मिला। जब से आयी, तुम्हारा घर मिट्टी में मिल गया। तुमने इतने दिन मुझे जिस प्रेम से रखा, माँ भी न रखती। भगवान मुझे फिर जन्म दे, तो तुम्हारी कोख से दे, यही मेरी अभिलाषा है।''[6] **प्रेमचंद ने दिखाया है कि स्त्री भले बाहर से कितनी ही कठोर दिखाई दे, लेकिन उसके अंदर ममता, प्रेम, सहानुभूति और त्याग के गुण अंतर्निहित होते हैं।**

'गोदान' उपन्यास में उस समय स्त्रियों कि जो दशा थी, उसका यथार्थ वर्णन हमें मिलता है। समाज में स्त्रियों को स्वतंत्रता और समानता का कोई अधिकार नहीं था। उस समय समाज में स्त्री का जो शोषण और दमन हो रहा था, प्रेमचंद चाहते थे कि वह स्वंय इसके खिलाफ संघर्ष करें। **वह गोदान के माध्यम से उनमें एक चेतना भरना चाहते थे।**

धर्म संस्था कैसे अंधविश्वास का चोला पहनकर स्त्री के शोषण का कारण बन रहा है। उपन्यास में सिलिया को एक समर्पित प्रेमिका के रूप में दिखाया गया है, लेकिन मातादीन को उससे कोई प्रेम नहीं है, वह सिर्फ उसके शरीर और परिश्रम का शोषण करता है। प्रेमचंद यहाँ दिखाते हैं कि सिलिया अपने स्वाभिमान के लिए संघर्ष नहीं करती है। जहाँ कहीं ना कहीं लेखक स्त्री के त्याग की भावना को दिखा रहे हैं। उसे आदर्शवाद के बोझ से लाद दिया गया है। जिस कारण वह संघर्षशील नहीं है। उपन्यास में अभिजात्य वर्ग द्वारा निम्न जाति की स्त्री के प्रति जो दृष्टिकोण रहा होगा, वह हमें देखने को मिलता है। मातादीन, सिलिया को पत्नी की तरह भोग तो रहा था, परंतु वह उसे पत्नी का दर्जा देने को तैयार नहीं था, जो उस समय समाज में रखेल के रूप में तो निम्नजात की स्त्री को रखा जाता होगा

[6] मुंशी प्रेमचंद, गोदान, पृष्ठ 126

यह इंगित करता है। परंतु विवाह संबंध जाति के अंदर ही होते होंगे यह निश्चित था। एक और जहाँ मातादीन, सिलिया को सिर्फ उपभोग की वस्तु समझ रहा था, वही सिलिया, मातादीन को स्वामी का दर्जा देती है। और मातादीन द्वारा बार–बार आहत होने पर भी वह उसका साथ नहीं छोड़ती है। ऐसा ही एक वाक्या तब आता है जब सहुआइन सिलिया से अपने उधार के पैसे लेने के लिए आती है। सिलिया पैसों की जगह कोई सेर भर अनाज उसके आंचल में डाल देती है। उसी समय मातादीन अनाज वापस डालने को कहता है। जिस पर सिलिया कहती है – ''तुम्हारी चीज में मेरा कुछ अख्तियार नहीं है ? मातादीन आंखें निकालकर बोला – नहीं, तुझे कोई अख्तियार नहीं है। काम करती है, खाती है। जो तू चाहे की खा भी, लूटा भी, तो यह यहाँ न होगा। अगर तुझे यहाँ ने परता पड़ता हो, कहीं और जाकर काम कर। मजदूरों की कमी नहीं है।''[7] इतना तिरस्कार सहकर भी सिलिया, मातादीन को छोड़ने को तैयार नहीं है। यहाँ प्रेमचंद जी स्त्री की एक आदर्श छवि पेश कर रहे हैं। प्रेमचंद जी इस उपन्यास में यही दिखाना चाहते हैं कि स्त्री एक बार जिसे मन से पति स्वीकार ले फिर वह लाख यातनाएँ और तिरस्कार सहकर भी उसका साथ नहीं छोड़ती है। जब सिलिया के मां–बाप उसे ले जाना चाहते हैं तब वह साफ मना कर देती है – मार डालो दादा, सब जने मिलकर मार डालो। हाय अम्माँ, तुम इतनी निर्दयी हो; इसलिए दूध पिलाकर पाला था ? सौर में ही क्यों न गला घोंट दिया ? हाय ! मेरे पीछे पंडित को भी तुमने भिरस्ट कर दिया। उसका धरम लेकर तुम्हें क्या मिला ? अब तो वह मुझे न पूछेगा। लेकिन पूछे ना पूछे, रहूंगी तो उसी के साथ। वह मुझे चाहे भूखो रखे, चाहे मार डाले, पर उसका साथ नहीं छोडूंगी। उसकी साँसत कराकर छोड़ दूँ ? मर जाऊँगी, पर हरजाई न बनूँगी। एक बार बाँह पकड़ ली, उसी की रहूंगी।''[8] सिलिया के द्वारा प्रेमचंद ने उस समय जातिवाद के कारण स्त्री का जो शोषण हो रहा था, उसे दर्शाया है। तथा उपन्यास में उसका हल करने की बजाय स्वयं स्त्री को शोषण के खिलाफ संघर्ष करने के लिए उसका ध्यान इस ओर इंगित किया है।

इस प्रकार उपन्यास में सोना और रूपा के पात्रों के द्वारा प्रेमचंद जी ने उस समय दहेज प्रथा और अनमेल विवाह की समस्या को भी दर्शाया है। **लेकिन स्त्री में अपार धैर्य को प्रेमचंद ने दिखाया है कि वह कैसे हर परिस्थिति से समझौता कर लेती है और किसी से कुछ नहीं कहती है।** रूपा की शादी जब अधेड़ से हो जाती है, तब भी वह खुश है। उसकी अभिलाषा अपने घरवालों को खुश देखने की थी। वह उसी में खुश थी, रामसेवक अधेड़ होकर भी जवान हो गया था। रूपा के लिए पति था उसके जवान, अधेड़ या बूढ़े होने से उसकी नारी–भावना में कोई अंतर न आ सकता था। उसकी यह भावना पति के रंग–रूप या उम्र पर आश्रित न थी, उसकी बुनियाद इससे बहुत गहरी थी श्वेत परंपराओं की तह में, जो केवल किसी भूकंप से ही हिल सकती थी ..... और उसकी सबसे बड़ी अभिलाषा थी अपने घरवालों की खुशी देखना।''[9]

[7] मुंशी प्रेमचंद, गोदान, पृष्ठ 207

[8] वही, पृष्ठ 220

[9] मुंशी प्रेमचंद, गोदान, पृष्ठ

इस प्रकार यहाँ प्रेमचंद जी स्त्री के एक बेटी के रूप में बलिदानों को दिखाते हैं। यहाँ बेटी का भी एक आदर्श रूप पेश किया है।

इसी प्रकार उपन्यास में शहरी स्त्री पात्र भी आधुनिकता की ओर बढ़ते जरूर नजर आते हैं, परंतु प्रेमचंद जी उन्हें भी अंत में आदर्शवाद का चोला पहनाते नजर आते हैं। उपन्यास में मालती एक खुले विचारों की लड़की है। वह इंग्लैंड से डॉक्टरी पढ़कर आई है। वह सभी से प्रसन्न मुद्रा से मिलती है। लेकिन जैसी वह दिखती है वह ऐसी नहीं है। वह स्त्री भी जब उभरकर सामने आती है तब उसका आदर्श रूप ही हमें देखने को मिलता है – ''मालती बाहर से तितली है, भीतर से मधुमक्खी। उसके जीवन में हँसी ही हँसी नहीं है, केवल गुड़ खाकर कौन जी सकता है और फिर जिए भी तो वह कोई सुखी जीवन न होगा। वह हँसती है, इसलिए कि उसे इसके भी दाम मिलते हैं। उसका चहकना और चमकना, इसीलिए नहीं है कि वह चहकने को ही जीवन समझती है, या उसने निजत्व को अपनी आँखों में इतना बढ़ा लिया है कि जो कुछ करें अपने ही लिए करें। नहीं वह इसलिए चहकती है और विनोद करती है कि इससे उसके कर्तव्य का भार कुछ हल्का हो जाता है।''[10]

इसी प्रकार उपन्यास में गोविन्दी खन्ना की पत्नी है। और अपने पति की उपेक्षा का शिकार है। जहाँ खन्ना पति के रूप में घर के जो ठाट–बाट हैं वहीं गोविंद को देकर अपना कर्तव्य पूरा हुआ समझता है। वही गोविंद खुद को उपेक्षित समझती है। वह निराश है। और उसे जीवन में कोई आकर्षण नहीं महसूस होता है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि प्रेमचंद जी ने 'गोदान' में स्त्री को आदर्श रूप में प्रस्तुत करते हुए समाज में उसकी दयनीय दशा को इंगित किया है। प्रेमचंद ने उस समय के सामाजिक व सांस्कृतिक बदलाव को भी कहीं न कहीं चिन्हित किया है। प्रेमचंद जी कहीं न कहीं **नारी के परिवारिक रुप को अधिक महत्व देते दिखाई देते हैं, न कि उसके स्वतंत्र रूप को।**

'गोदान' स्त्री की स्वतंत्रता और समता की ओर बढ़ता हुआ एक कदम हमें जरूर दिखाई देता है।

[10] वही, पृष्ठ